माँ-बाप और औलाद एक अज़ीम नेमत

१) मां अफजल हे कि बाप.

२) बेटी अफजल कि बेटा.

३) कम्बल के दो टुकडे.

४) बाप की फरयाद.

५) बाप की शफकत का एक अजीब किस्सा.

६) मां की खीदमत तहज्जुद की नमाज से अफजल.

७) मां बाप के लिये दुवा करना.

उर्दू किताब वालिदैन और औलाद एक अज़ीम नेमत, से मजमून का खुलासा लिप्यान्तरण किया है.

मौलाना रूहुल्लाह नक्शबंदी.

1) मां अफजल हे कि बाप

जिस मुस्लमान के मां बाप जिन्दा हो उन्की इजाजत के बगेर अल्लाह के रास्ते मे जाना जायज नही हे क्योकि इन दोनो का हुक्म मानना फरजे एन हे और अल्लाह के रास्ते मे जाना फरजे किफाया हे, मां बाप अपने बच्चे को नफली हज और तिजारत के सफर से भी रोक सकते हे अब सवाल पैदा होता हे कि अगर किसी बच्चे की मां भी जिन्दा हे और बाप भी जिन्दा हे तो उसने एक से इजाजत ले ली और दूसरे ने इनकार कर दिया, अब बच्चा मजबूर हे तो फिर क्या करे ? तो इस सूरत मे बच्चे को अपने बाप की बात मानना पडेगी.

2) बेटी अफजल कि बेटा

इस्लामी मुआशरे के अंदर जो रसूलुल्लाह ﷺ के दौर मे था उसमे बेटी को बडी तरजीह दी जाती थी.
रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया - जिसने दो बेटीयो की जवान होने तक परवरिश की, मे और वो इन दो उन्गलियो की तरह इकट्ठे होगे और आप ﷺ ने उन्गलियो को मिला दिया. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया - कि कोई अपनी लडकी को जिन्दा दफन ना करे ना उस्को बेइज्जत करे ना उस्को लडके पर तरजीह दे तो अल्लाह उसे जन्नत मे

दाखील करेगा. (अबू दाउद)
बेटी को रसूलुल्लाह ﷺ ने रहमत कहा हे.
रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया - कि जब बाप घर कोई चीज लेकर जाये तो बच्चो मे सब्से पहले बेटी को दे.
रसूलुल्लाह ﷺ अपनी बेटी हजरत फातिमा रदी को आता हुवा देखते तो प्यार मे खडे हो जाते उन्की पेशानी चूमते और पास बिठाते.
इस्लाम के अंदर बेटी को पालना ज्यादा सवाब का काम हे क्योकि लडके को पालने से आपको फायदा होगा वो कमायेगा, खिलायेगा. बेटी को आपको सिर्फ अल्लाह की रजामन्दी की खातिर पालना हे. बेटा तो ना मालूम आपको दोजख से बचायेगा कि नही बचायेगा. हा बेटी को पाल पोस कर शादी कर देना सिर्फ इतना अमल बाप और दोजख के दरमीयान दीवार बना देगा.

3) कम्बल के दो टुकडे

हजरत मौलाना रूम (रह) मसनवी शरीफ मे लिखते हे कि एक नवजवान बेटे ने अपने बूढे बाप से कहा अब्बाजान अगर आप इसी तरह हमारे घर मे रहे तो हमारे घर का निजाम खराब हो जायेगा, रोज रोज की परेशानी से बेहतर हे आप किसी और जगह अपना ठिकाना बना ले,

बूढे बाप ने कहा कि बेटा मे इस उम्र मे कहा जावूगा, बेटा अगर मेरी वजह से तुम्हे तकलीफ हे तो मुझे खुद कही ले जा कर छोड आवो, बेटे ने कहा ठीक हे चलो मे खुद आपको कही छोड आता हू.

बाप बेटा दोनो चलने लगे तो इस बूढे के पोते ने कहा मे भी बाबाजी के साथ जावूगा, जवान बेटा केहने लगा ठीक हे तुम भी चलो, बाप बेटा और पोता चलते चलते एक जंगल मे पोहचे तो जवान बेटे ने अपने बूढे बाप को एक पुराना कम्बल दे दिया और कहा कि अब आप यहा अपनी जिन्दगी गुजारे और अपने बेटे को साथ लेकर वापिस होने लगा, छोटे पोते ने जब ये मन्जर देखा तो केहने लगा अबू जरा ठेरये, वो रूक गया तो इस पोते ने अपने दादा से कम्बल लिया उस्के दो टुकडे करके एक टुकडा दादा को दे दिया और दूसरा टुकडा साथ लेकर अपने अबूजान के पास आ गया.

नवजवान ने अपने बेटे से पूछा कि कम्बल क्यो ले लिया हे? छोटे पोते ने कहा आज आप जवान हो और तुम्हारा बाप बूढा हे तुमने उसे एक कम्बल देकर घर से निकाल दिया हे कल को मे भी ऐसा ही करूगा दादाजान के कम्बल के दो टुकडे करके आधा ले लिया और आधा दादाजान को दे दिया, बाप से कहा अब्बाजान जब मे जवान हो जावूगा

और आप बूढे हो जायेगे तब मे भी ये कम्बल का टुकडा दे कर तुम्हे घर से निकाल दूगा, चुनांचे नवजवान ने उसी वकत अपने बूढे बाप से माफी मांगी रोने लगा और अपने बूढे बाप को गले लग गया और उन्हे अपने साथ घर वापिस ले आया.

याद रहे बाप घर की सजावट हे, बाप घर की इमारत हे, बाप घरका दरवाजा हे, बाप घर की इमारत का सतून हे, बाप घर की इमारत की छत हे, दोस्तो सबको बूढा होना हे, हमेशा जवानी बाकी नही रेहती, इसलिये मां बाप की इज्जत करो एहतेराम और अदब से पेश आवो, हर जान को मौत का मजा चखना हे, सबको एक दिन मरना हे, अपनी अपनी बारी पर यहा से चले जाना हे, नेक अमल करो जन्नत जावो, मां बाप राजी तो अल्लाह राजी, ये कीमती वकत बरबाद ना करो बुढापे मे मां बाप की बढ चढ कर खीदमत करो, आज जो तुम करोगे कल तुम्हारी औलाद करेगी.

4) बाप की फरयाद

अबू हफस इस्कन्दरी रह. के पास एक शख्स आया और कहा मेरे लडके ने मुझे मारा हे आपने हेरान होकर पूछा हकीकत मे मारा हे, आपने बाप से पूछा बेटे को अदब

सिखलाया था? जी नही, बेटे को कुरान पढाया था? जी नही, आपने पूछा वो क्या काम करता हे? वो खेती बाडी करता हे, अबू हफस ने फरमाया तुझे मालूम हे कि तेरे बेटे ने तुझे क्यो मारा हे? बाप ने जवाब दिया मुझे नही मालूम क्या वजह हे? आपने फरमाया वो सुबह ही सुबह गधे पर सवार हो कर खेतो की तरफ जा रहा था आगे बैल होगे और पीछे कुत्ता होगा तो चूकि तूने उसे कुरान पढाया ही नही, मौलवी साहब के पास मस्जिद भेजा ही नही उनसे तेरे बेटे ने सबक पढा ही नही, जो वो रास्ते मे पढता जाता, इसलिये वो गाना गाता जा रहा था, बडे अफसोस की बात हे तेरी जहालत पर, कि तूने उसे गाने से मना क्या होगा इस पर उसने तुझे बैल समझ कर मारा होगा अल्लाह का लाख लाख शुक्र हे कि उसने तेरा सर नही फोड दिया.

5) बाप की शफकत का एक अजीब किस्सा

एक छोटे बच्चे ने दीवार पर कव्वा बैठा हुवा देखा तो अपने वालिद से केहने लगा अब्बाजान वो दीवार पर जो परिन्दा बैठा हुवा हे उसका नाम किया हे? बाप ने कहा बेटा कव्वा हे, बेटा केहने लगा अब्बाजान वो दीवार पर कव्वा बैठा हे? यानी बच्चो की आदत के मजाबक बार-बार कहा यहा तक कि सौ बार कहा बाप भी हर बार यही केहता रहा

कि बेटा वो कव्वा हे, और साथ ही एक कागज पर भी ये लिखता रहा, जब बच्चा जवान हो गया और बाप बूढा हुवा तो उसने देखा कि दीवार पर एक कव्वा बैठा हे बूढे बाप ने जवान बेटे से कहा बेटा देखो वो दीवार पर कव्वा बैठा हे, बेटे ने जवाब दिया हा अब्बाजान वो कव्वा हे, बाप ने फिर पूछा बेटा वो दीवार पर कव्वा बैठा हे? बेटा गुस्से मे आगया और केहने लगा बाबाजी किया काये काये लगा रखी हे, जब एक मरतबा केह दिया वो कव्वा हे तो बात खत्म करो, बूढे बाप ने वो लिखा हुवा पुराना कागज निकाला और कहा इसे पढो तुमने बचपन मे सौ मरतबा कहा था अब्बाजान वो कव्वा हे? मेने हर बार बडी मुहब्बत से जवाब दिया था कि बेटा वो कव्वा हे और जब मेरी बारी आई तो दूसरी मरतबा ही मे गुस्से हो गये, जब बचपन मे वालिदैन अपनी औलाद के साथ इतनी शफकत करते हे उनके खाने पीने और पेहेन्ने का ख्याल रखते हे तो औलाद को भी चाहिये कि वो बूढे मा बाप को अपने ऊपर बोझ ना समझे बल्कि उन्की खीदमत को अपनी सादतमन्दी तसव्वुर करे और सोचे कि अगर आज ये बूढे हे तो कल हम भी बूढे होगे, अगर आज हम उन्की खीदमत करेगे तो कल को हमारी औलाद भी हमारी खीदमत करेगी.

6) मां की खीदमत तहज्जुद की नमाज से अफजल

केहमश बिन हसन जो अपनी मां की बहुत खीदमत करते थे उन्का इस्तिन्जा वगेरा अपने हाथो से उठाते और साफ करते थे, किसी अमीर आदमी ने रूपये की थैली तोहफे के तौर पर उन्हे दी और कहा इस रकम से अपनी मां की खीदमत के लिये गुलाम या बांदी खरीद ले, केहमश ने ये रकम वापिस कर दी और कहा ए सुलेमान मे बच्चा था तो मेरी मां ने मेरी खीदमत के लिये कोई नौकर नही रखा था बल्कि उन्होने खुद मेरी परवरिश और खीदमत की थी, इसलिये मे भी खुद अपनी मां की खीदमत करना चाहता हू, मुहम्मद बिन मुनकदिर जब रात को तहज्जुद के लिये उठते तो वालिदा उनको पाव दबाने के लिये केह देती तो वो नमाज के बजाये अपनी मां के पाव दबाते और सुबह कर देते तहज्जुद की नमाज छोड देते क्योकि वो मां की खीदमत को तहज्जुद की नमाज से अफजल समझते थे.

7) मां बाप के लिये दुवा करना

हजरत अबू हुरेरा रदी. से रिवायत हे हुजूर ने इरशाद फरमाया जब इन्सान मर जाता हे तो उस्के सब आमाल खत्म हो जाते हे लेकिन तीन चीजो का नफा पोहोचता रेहता हे. (मिशकात/३२; अज मुस्लिम)

१) सदका जारीया जिस्का का सवाब बराबर जारी रेहता हे : सदका जारीया उस्को केहते हे जिस्का नफा वकती तौर पर खत्म ना हो जाये, बल्कि लोग इस से नफा उठाते रहे और सदका करने वाले को सवाब मिलता रहे, मसलन मस्जिद बनवा दी, दीनी मदरसे की तामीर मे हिस्सा ले लिया, किसी दारउल-उलूम मे तफसीर और हदीस और फिकह की किताबे वक्फ कर दे कही कुंवा खुदवा दिया या मुसाफिरखाना बनवा दिया या कोई ऐसा काम कर दिया जिस्से अवाम और खवास को नफा होता रहे, एक आदमी इस तरह के किसी काम मे पैसा खर्च करके जिन्का ऊपर जिक्र हुवा कबर मे चला गया और लोग उस्के सदका और खैरात से नफा उठा रहे हे तो उस्के नामए आमाल मे बराबर सवाब लिखा जा रहा हे, और दरजात बुलन्द हो रहे हे, जहा तक हो सके जिन्दगी मे ऐसा कोई काम जरूर कर देना चाहिये.

२) वो इल्म जिस्से नफा उठाया जाता हो : ये भी वो चीज हे जिस्का सवाब मौत के बाद जारी रेहता हे: किसी को कुरान मजीद पढा दिया या नाजरा पढा दिया या किसी को नमाज सिखादी, किसी को आलिमे दीन बना दिया कोई दीनी किताब लिख दी, या अपने पैसे से छपवा दी, ये इल्म सदका जारीया हे जब तक पढाने वाला कुरान पडेगा

या पढायेगा फिर उस्के शागिरद और शागिरदो के शागिरद पढायेगे मसला बतायेगे लोग इस से फायदा उठायेगे और आगे उनके शागिरद और शागिरदो के शागिरद इल्म फैलायेगे जिस्को नमाज सिखादी वो नमाज पढता हे और दूसरो को सिखायेगा तो इस्का का सवाब सदीयो तक इस्को मिलता रहेगा, जिसने दीनी इल्म को आगे बढाया या आगे बढाने का जरीया बन गया तो जितने लोग उस्का जरीया और वास्ता बुनते जायेगे इन सबको सवाब मिलता रहेगा और किसी के सवाब मे कमी ना होगी और इस शख्स को भी बराबर सवाब पोहोचता रहेगा.

३) नेक औलाद जो दुवा करती हे इस्की दुवा का फायदा भी वालिदैन को पोहोचता रेहता हे : दुवा मे तो कुछ जान माल नही खर्च होता मौका मौका से अगर वालिदैन लिये दुवाये मगफिरत और दरजात की बुलन्दी की दुवा करदी जाये तो वालिदैन को बहुत बडा नफा पोहोचता रहेगा और औलाद का कुछ भी नही खर्च होगा औलाद की पैदाइश का जरीया बनना और इस्को पालना पोसना चूकि वालिदैन का अमल हे और वालिदैन की परवरिश के बाद औलाद दुवा के काबिल हुवी हे, इसलिये औलाद की दुवा को भी मरने वाले के आमाल मे गिन लिया गया हे, और

सदका जारीया करार दे दिया गया हे और अगर औलाद को मेहनत और कोशिश करके नेकी पर डाल दे तो वो जो नेक आमाल करेगी तो उन्का सवाब भी मां बाप को मिलेगा और औलाद के सवाब मे कुछ भी कमी ना होगी औलाद के अलावा जो कोई भी शख्स किसी के लिये दुवा करेगा उस्का भी नफा पोहचेगा, लेकिन औलाद का खुसूसी जिक्र इसलिये फरमाया कि औलाद को इस काबिल बनाने मे मां बाप की मेहनत और कोशिश को दखल हे इसलिये औलाद की दुवा उन्ही के आमाल मे गिन ली गयी.